मेरा प्रिय उपन्यासकार : मुंशी प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंदजी मेरे प्रिय उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों के पात्रों में जो सरलता और निष्कपटता मिलती है, वह मुझे कुछ परिचित-सी लगती है। उनके उपन्यासों की कथाएँ मुझे आसपास की, अपने घर की कथाएँ लगती हैं और उनके उपन्यासों के पात्र मुझे अपने आसपास घूमते-फिरते मिलते हैं।

प्रेमचंद उर्दू कथा-साहित्य के प्रवर्तक थे। वे जब हिंदी में आए तो यहाँ भी बड़ा नाम पाया। हिंदी में चुस्त मुहावरेदार और चलती भाषा लिखने में वे सफल हुए। राष्ट्रीय जीवन में भी वे रम चुके थे। राजनीति में गांधीजी ने जो कुछ किया, वही साहित्य में प्रेमचंद ने किया; जैसे हिंदू-मुसलिम ऐक्य, अछूतोद्धार, ग्राम-सुधार, समाज-सुधार, स्वाधीनता की लालसा आदि।

वे सच्चे अर्थों में भारतीय थे। वे किसी मत या संप्रदाय विशेष के समर्थक नहीं थे। मनुष्य के रूप में वह साहित्यकार से भी अधिक महान् थे। वह मानवता के पुजारी थे। समस्त विश्व उनकी दृष्टि में एक समान था।

अपने जीवन में उन्होंने ग्राम्य-जीवन की दरिद्रता तथा नागरिक जीवन की कुटिलता और विडंबना को आँखों से देखा था। उनका साहित्य मानो दलित, पीड़ित, शोषित मानव के चीत्कार की प्रतिध्वनि है।

प्रेमचंद के उपन्यास मानो हमारी राष्ट्रीय जागृति के इतिहास हैं। उनका प्रत्येक पात्र किसी-न-किसी रूप में राष्ट्रीय जीवन से संबंध रखता होगा। प्रेमचंद सामाजिक समस्याओं के कलाकार थे। उनके उपन्यासों को हम सुविधा की दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं— सामाजिक और राजनीतिक। "प्रेमा", "वरदान", "प्रतिज्ञा", "सेवासदन", "निर्मला" और "गबन" सामाजिक कोटि में आएँगे तथा "प्रेमाश्रम", "रंगभूमि", "काया-कल्प", "कर्मभूमि" और "गोदान" राजनीतिक कोटि में। इन सभी उपन्यासों में गांधीवादी भारत मूर्त हो उठा है।

देश की बुराइयों को वे सहन नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने बुराइयों के विरुद्ध लेखनी उठाई। "प्रतिज्ञा" में विधवा-विवाह का समर्थन है। "सेवासदन" में अनमेल विवाह और वेश्याजीवन; "गबन" में आभूषणप्रियता और "निर्मला" में वृद्ध-विवाह तथा दहेज का कुपरिणाम दिखाया गया है।

दूसरी समस्या राजनीतिक है, जो "प्रेमाश्रम" से प्रारंभ होती है और "रंगभूमि", "कर्मभूमि" से होती हुई "गोदान" तक चलती रहती है। गांधीजी की हिंदू-मुसलिम एकता, हरिजन-उद्धार, नारी समानता आदि बातों को प्रेमचंदजी ने एक योग्य कलाकार की भाँति अपना लिया था। फिर वे ग्रामों की ओर झुके। "प्रेमाश्रम" से लेकर "गोदान" तक क्रमशः उनकी इस यात्रा की प्रगति की सीढ़ियाँ हैं।

वैसे तो गाँवों के साथ-साथ प्रेमचंदजी ने नगरों का भी चित्रण किया है, किंतु गाँव के चित्रण में प्रेमचंदजी ने विशेष सफलता प्राप्त की है। पूँजीपति और बड़े-बड़े जमींदार, राय साहब और मिल मालिक आदि पात्रों द्वारा उन्होंने समाज में एक ओर हो रहे शोषण तथा दूसरी ओर विलासितापूर्ण जीवन की जो झाँकियाँ प्रस्तुत की हैं, वे स्वाभाविक बन पड़ी हैं।

प्रेमचंद ग्राम्य-जीवन के चित्रण में अधिक सफल हुए। परंपरा के बोझ को कंधों पर उठाए, ऋण, बेकारी और बेगार का शिकार भारतीय किसान कठोर श्रम करता है, फिर भी उसकी जो दुर्दशा होती है, उसका सजीव चित्रण "गोदान" में मिलता है। गाँवों के खंडहरों पर नगरों का विशाल भवन तैयार होता है। "रंगभूमि", "प्रेमाश्रम" और "गोदान" में इसका सफल चित्रण है।

प्रेमचंद कलम के मजदूर थे। अतः मजदूरों की पीड़ा को समझने में सफल हुए। मानव-मात्र के प्रति और विशेष रूप से मजदूरों और किसानों के शोषित वर्ग के प्रति जो हार्दिक सहानुभूति प्रेमचंदजी में पाई जाती है, उससे वे प्रत्येक पाठक के निकट आ जाते हैं। इन्हीं कारणों से मैं उनको अपना प्रिय उपन्यासकार मानता हूँ।